Gyanvividha, Vol.-3; Issue-2 (Apr.-June) 2026 : PP-362-365

ज्ञानविविधा

कला, मानविकी और सामाजिक विज्ञान की सहकर्मी-समीक्षित, मूल्यांकित, त्रैमासिक शोध पत्रिका

ISSN : 3048-4537(Online)
3049-2327(Print)
IIFS Impact Factor-6.125
Vol.-3; Issue-2 (Apr.-June) 2026
Page No.- 362-365
©2026 Gyanvividha
https://journal.gyanvividha.com

Author's :

डॉ. मेरली के पुन्नूस
सह आचार्य, हिंदी विभाग, सेंट स्टीफेंस, कॉलेज, उषवूर.

Corresponding Author :

डॉ. मेरली के पुन्नूस
सह आचार्य, हिंदी विभाग, सेंट स्टीफेंस, कॉलेज, उषवूर.

तीसरी ताली उपन्यास में चित्रित ट्रांसजेंडर जीवन

शोध सार-: ट्रांसजेंडर समाज दर-दर की ठोकरें खाने को अभिशप्त है। बरसों से उनके द्वारा भोगे गए यथार्थ का चित्रण हिंदी के समकालीन उपन्यासों के द्वारा किया जा रहा है। उन्हें इन्सान न समझने की उनकी पीड़ा को उकेरकर, उन्हें न्याय दिलाने की पहल की जा रही है। मुख्यधारा से जुड़कर अपनी पहचान बनानेवाले अनेक ट्रांसजेंडर उभरकर सामने आ रहें हैं।

बीज शब्द-: ट्रांसजेंडर, गुरु, गिरिया, चेला, हिजड़ा, बस्ती।

विषय-वस्तु-: उपन्यास के केंद्र में विनीता ट्रांसजेंडर है। उपन्यास में विनीता के अलावा डिम्पल, नीलम, रीना, पिंकी, सुनयना, नरगिस, निकिता, विजय कृष्णा ट्रांसजेंडर के जीवन की दास्तान बयान किया गया है। जहाँ डिम्पल, नीलम, रीना, पिंकी, सुनयना, नरगिस, निकिता जैसे ट्रांसजेंडर इसे अपनी नियति मानकर जी रहें थे , वहीं विनीता और विजय कृष्णा समाज में अपनी पहचान स्थापित करने में कामयाब होते हैं। तीसरी ताली बजाकर अपनी जिंदगी बसर करनेवालों पर आधारित इस उपन्यास का शीर्षक प्रतीकात्मक है-"नामकरण की दृष्टि से 'तीसरी ताली' प्रतीकात्मक ठंग से किन्नर की पहचान को अनावृत्त करता है क्योंकि तीन ताली की लय पर नाच-गाकर संतान पैदा करने में अक्षम ये लोग दूसरे के बच्चे के जन्म पर बधाई देते हुए आशीर्वाद देते हैं। दूसरों के यहाँ शुभ और मंगलदाता बनकर जाते हैं लेकिन अपने घर और समाज के लिए अशुभ और अमंगलकारी हैं।"[1] इनकी इस स्थिति को पर्त दर पर्त उघाड़ा गया है।

उपन्यास में विनीता ट्रांसजेंडर के संघर्ष को शब्दबद्ध किया है। विनीता ब्यूटी पार्लर खोलती है जिससे 'गे वर्ल्ड' की शुरुवात होती है। यह पार्लर फरीदाबाद एनआईटी पाँच के मार्केट में था। केवल समलैंगिक और हिजड़े ही इस पार्लर में आते थे। ब्यूटी पार्लर में काम करनेवाले भी इसी बिरादरी के थे। विनीता ने मनचन्दा के इंस्टीटयूट में नौकरी करते हुए बहुत रुपये कमाये थे। इसके अलावा नये पिता कांस्टेबल राज चौधरी ने भी उसकी मदद की थी। टी.वी में यह खूब चर्चा का विषय बना था। टी.वी न्यूज़ चेनलों में यहाँ आनेवाले लोगों के इंटरव्यू दिखाये गए थे। वे यहाँ खुद को कमफर्टबल महसूस करते हैं। विनीता ने नई ब्रांच की घोषणा की। टी वी चैनल जी टी वी में उसका रियल्टी शो 'द छक्का' के द्वारा उसके जीवन

संघर्ष को दिखाया गया। उसके बचपन से जवानी तक का सफर दिखाया गया, सिदधार्थ एनक्लेव से केजी मार्ग, पुलिस स्टेशन, फरीदाबाद, साउथ दिल्ली और पेज थ्री तक पहुँचने का पूरे सफर पर प्रकाश डाला गया था। विनीता के अलावा मणि कलीता, राजू, सुप्रिया कपूर के जीवन संघर्ष को भी दिखाया गया कि वे किन हालातों से गुजरते हुए इस मुकाम को हासिल करते हैं। मणि कलीता का जन्म गुवाहाटी असम में हुआ था। वे अब गन्धर्व महाविद्यालय में डांस डायरेक्टर हैं। स्कूल में बच्चों द्वारा हिजड़ा होने का मजाक उडाये जाने पर उन्हें स्कूल छोड़ना पड़ा और उन्होंने कथक सीखने का फैसला लिया। गुरु अनन्तकुमार के स्कूल में रहकर कथक सीखने लगी। धीरे-धीरे वे कथक में पारंगत हो गईं। स्कूल के चपरासी ने उनके साथ बदसलूकी की। उन्होंने गन्धर्व महाविद्यालय के कथक डांसर के पद के विज्ञापन पर गुरु अनंतकुमार के कहने पर विज्ञापन दिया। आज वे महाविद्यालय की डायरेक्टर बन गई हैं। आगे मुम्बई के कमाथीपुरा बस्ती में चाय की दुकान पर काम करनेवाले राजू की दास्तान को उजागर किया जाता है। उन्हें भी स्कूल कभी नसीब नहीं हुआ था। उनके माता-पिता उन्हें लावारिस छोड़ गए थे। लेकिन वे पढते गए और ग्रेजुएट तक की तालीम हासिल कर ली। अब वे कमाथीपुरा में एडस और बीडी से ग्रस्त वेश्याओं और ट्रांसजेंडरों की सेवा कर र हे हैं। उन्होंने एनजीओ भी बनाया है। न्यूयार्क में संयुक्त राष्ट्र संघ के एडस को लेकर एक सम्मेलन में भारत का प्रतिनिधित्व भी कर चुके हैं। उन्होंने वेश्याओं के दो बच्चे गोद ले लिए हैं। वे अपने समाज को संघर्ष करने की प्रेरणा देते हैं – "उठो और समाज में अपना मुकाम बनाओ। अपना हक हासिल करो। हक भीख में नहीं मिलता, उसके लिए संघर्ष करना पड़ता है।"[2] आगे सुप्रिया कपूर की दास्तान बयान की जाती है। सुप्रिया कपूर ने अपने ट्रांसजेंडर होने की बात छुपाई। वे आज एक मशहूर डांसर हैं। अब वे समाज से भिड़ सकती हैं और उनमें अपनी पीड़ा का खुलासा करने की हिम्मत भी आ गई है। अपने जीवन की सच्चाई के खुलासे के बाद कई निर्माताओं ने उन्हें फ़िल्म से बाहर कर दिया था तब उन्होंने खुद फ़िल्म निर्माता बनने का फैसला किया था। सामाजिक मानसिकता की ओर इशारा करते हुए सुप्रिया कपूर कहती हैं – "मैंने तो अपने हिजडत्व को छिपाया, लेकिन जो फिल्मी पत्रकार इस तथ्य को जानते थे, उन्होंने भी इसका खुलासा नहीं किया। जानते हैं क्यों नहीं किया ? दरअसल, वे मुझे ब्लैकमेल करना चाहते थे कि मैं उनको मोटी रकम नहीं दूँगी तो वे मेरे हिजड़ी होने के सत्य को जगजाहिर कर देंगे। मैंने रकम नहीं दी, फिर भी वे चुप रहे, तो सिर्फ इसलिए कि मैं औरत की तरह बिक रही थी और उनकी मैगज़ीन के कवर की शान थी। अब मैं थोड़े दिन हिजड़ी की तरह बिकूँगी। मैं कैसी हूँ ? कितनी पीड़ा सहती हूँ ? इन सवालों से किसी को सरोकार नहीं है। किसी को इस बात से कोई सरोकार नहीं है कि मेरे जन्म के बाद मेरी माँ ने मुझे देखकर आत्महत्या कर ली। बाद में बड़ी बहन सिर्फ इसी बात के लिए ससुराल से निकाल दी गई कि उसकी बहन हिजड़ी है। मेरे पिता किस तरह तिल – तिलकर मरे, इस बात से किसी को कोई लेना-देना नहीं है। मीडिया को तो बेचने से मतलब है। चाहे वह औरत हो या फिर हिजड़ी। जब तक बिकूँगी तब तक आप बेचेंगे।"[3] इसप्रकार रचनाकार ने उनके दुखती रग को बेनकाब करने का कार्य किया है।

इनसे भिन्न नहीं है विनीता की दास्तान भी। विनीता के माता-पिता ने उसे नकारा समझा था। वे उन्हें लड़का मानते जबकि वह खुद को लड़की मानती और लड़कियों की तरह सज-धजकर जीना चाहती थी। लेकिन पिता ने ऐसे करने नहीं दिया, यदयपि वह माँ से ज्यादा पिता के करीब थी। इसलिए वह अपने माता – पिता की तेरहवीं करना चाहती थी। वास्तव में यह उसका प्रतिरोध ही था, ऐसा करके वह अपने बेटे होने का कर्तव्य निभाना चाहती थी – "नयी दुनिया में नये लोगों के साथ वह खुश थी। अब तो चौधराइन भी उससे ठीक से बोलने लगी थी। पुराना घर नये रिश्तों के बावजूद उसे याद आता था। इसलिए उसने उस याद को तिलांजलि देने के निमित्त अपने जीवित माता-पिता की तेरहवीं करने का मन बनाया था। पुरानी याद को भूलने से ज्यादा इस आयोजन के पीछे उसकी अपने परिवार से प्रतिशोध लेने की भावना अधिक थी। वह अपना पुत्र – धर्म निभाना चाहती थी, ताकि गौतम साहब को जीते – जी शान्ति मिल सके। उन्होंने उसे कभी लड़की नहीं माना। लड़के के नाते तो तेरहवीं का अधिकार उसका बनता था। फिर गौतम साहब के कोई लड़का था भी नहीं। वह यदि तेरहवीं नहीं करेगी तो फिर कौन करेगा !"[4] बड़ी-बड़ी हस्तियाँ उसके पार्लर में आते

हैं। उसने प्रमुख शहरों में भी अपने पार्लर खोले। वह पेज थ्री की सर्किल में आ गई थी। कॉस्मेटिक सर्जरी कर वह स्त्री में तब्दील हो गई थी, लेकिन बच्चे को जन्म देने में विफल थी। कामयाबी हासिल करने पर भी वह अकेली थी। अकेलेपन से छुटकारा पाने के लिए वह शराब पीने लगी थी। उसके साथ उसका अकेलापन ही था-"बेशक वह दूर निकल गई थी, मगर सब कुछ के बावजूद वह अकेली थी। वह जितनी ऊपर जाती, उतनी अकेली हो जाती। शराब के बिना उसे नींद नहीं आती थी।"[5] वास्तव में विनीता अपने पिता से नफरत नहीं करती थी, यह उसका प्यार ही था या पिता से बिछुड़ने की पीड़ा ही थी। वह सोचती कि अगर उसके पिता ने ब्यूटीशियन की ट्रेनिंग न दी होती तो वह आज इस मुकाम तक नहीं पहुँचती। टी.वी चैनलों में गौतम साहब ने विनीता को देखा था। गौतम साहब विनीता से मिलने आते हैं और उसे अपनी बेटी के रूप में स्वीकार करते हैं। पैकेट में एक बनारसी साड़ी, कुछ चूड़ियाँ, बिंदी के पैकेट और सस्ती किस्म की लिपिस्टिक और मेकअप के सामान लाते हैं। बेटे की चाहत में गौतम साहब ने चालीस की उम्र में एक बेटा जन्मा था। बेटे की ललक के चलते ही वे विनीता को उसकी इच्छा के अनुसार जीने नहीं देते। उन्होंने बच्चे का नाम विनीत गौतम रखा था। उसमें लड़कियों जैसे गुण पैदा होने लगे थे और शारीरिक बदलाव भी आ गये थे। स्कूल के बच्चे उससे अलग होने लगे थे। अकेले होने पर वह अपनी बहनों के वस्त्र पहनकर, सज-धजकर खुद को निहारता। गौतम साहब चाहते कि वह लड़कों की तरह रहे। उन्होंने उसकी हिफासद समाज से की। डिम्पल की मण्डली जब उनके नवजात शिशु को देखने आई तब गौतम साहब ने दरवाज़ा ही नहीं खोला। वे अपने बच्चे को ट्रांसजेंडरों को देने के लिए भी तैयार नहीं होते और आखिरकार वे अपना फ्लैट बेचकर सिदधार्थ एनक्लेव कॉलनी से चले जाते हैं। उनकी पडोसन आनन्दी आंटी ने उन्हें समाज की सोच की ओर इशारा करते हुए समझाने की कोशिश की थी कि – "प्रकृति की मार खाये बच्चे को पालना हँसी-मजाक नहीं है .... एक – न – एक दिन बेटा हिजड़ों को सौंपना ही पड़ेगा। ये दुनिया ऐसे बच्चों को स्वीकार नहीं करती। मन्द बुद्धि और विकलांग बच्चों को तो समाज बर्दाश्त कर लेता है, लेकिन हिजड़े को नहीं।"[6] विनीता किसी को बताए बिना अपना घर छोडकर चली गई थी। परिवारवालों में किसी ने भी उसकी खोज नहीं की और पुलिस में भी रिपोर्ट नहीं लिखवाई। लोगों से यही कहा गया कि वह कानपुर गया है और अब वहीँ पढ़ेगा। प्रतिकूल परिस्थितियों में भी विनीता ने हार नहीं मानी। संघर्ष करते हुए विनीता ने यह मुकाम हासिल किया था। कांस्टेबल राज चौधरी ने उसकी मदद की। चौकी इंचार्ज रमेश देसवाल की मदद से कांस्टेबल राज चौधरी ने उसे ब्यूटीशियन की ट्रेनिंग देनेवाले एक इंस्टीटयूट में काम दिलवाई। पिता द्वारा उसे दी गई ट्रेनिंग अब उसके काम आई थी – "स्कूल में जेंडर स्पष्ट न होने के चलते जब उसे दाखिला नहीं मिला था तो गौतम साहब ने उसे दिल्ली के मशहूर शहनाज ब्यूटीशियन इंस्टीट्यूट से ट्रेनिंग दिला दी थी। गौतम साहब ने यही सोचा था कि मुश्किल समय में यह ट्रेनिंग उसके काम आयेगी। हुआ भी यही। जब सब साथ छोड़ गए तो यही ट्रेनिंग उसके काम आई।"[7] अब वह कांस्टेबल राज चौधरी को पिता समान मानने लगी थी, जो पराये होकर भी उसके लिए अपने सगे रिश्तों से भी बढ़कर थे। उसे अपने पिता गौतम साहब से भी बेहद प्यार था। वहीँ आनंदी आंटी की बेटी निकिता ट्रांसजेंडर होने पर अपने हालात से हारकर ख़ुदकुशी कर लेती है। सिदधार्थ एनक्लेव कॉलोनीवालों ने निकिता को नहीं देखा था। आनंदी आंटी समाज की परवाह किये बिना उसे पढ़ाती रही। छठी कक्षा में जेंडर स्पष्ट न होने के कारण स्कूल में उसे दाखिला नहीं दिया गया। उसने आठवीं तक की शिक्षा घर में ही पूरी की। अब तक उसमें हिजड़ेवाले गुण आकार लेने लगे थे। समाज उसका मज़ाक उड़ाने लगा था। दुनिया से हारकर आनंदी आंटी ने अपनी बेटी निकिता को ट्रांसजेंडर नीलम के हवाले कर दिया और अपना मयूर विहार का फ्लैट बेचकर सिद्धार्थ एनक्लेव रहने आ गई थी। ट्रांसजेंडर नीलम के साथ भी यही घटित हुआ था। नीलम निकिता को बेटी की तरह पाल रही थी, उसका बहुत ध्यान रखती। नीलम ने उसे पढने को किताबें दीं, लेकिन निकिता का मन नहीं लग रहा था। उसे अपना भविष्य अंधकारमय लगने लगा। उसे लगा कि पढने के बावजूद भी उसे अपना पेट पालने के लिए नाच-गाना ही करना पड़ेगा। वह हीनभावना से ग्रस्त हो गई थी –"अपने को किसी से कम न समझनेवाली निकिता के अंदर अपने आधे-अधूरे होने का हीन भाव घर करने लगा। उसके दिमाग की खिड़की अभी इतनी बड़ी नहीं थी कि वह ऐसे लोगों से

प्रेरित हो पाती जो उसकी तरह ही थे और समाज से मोर्चा लिए हुए थे। पढ़े-लिखे थे। अपना काम करते थे। ब्यूटी पार्लर से लेकर दूसरे अच्छे धन्धों में लगे थे।"[8] नीलम के डेरे में बलिया से आई ज्योति को चुनरी पहनाने की रस्म संपन्न हो रही थी। तब चूहे मारने की दवा निकिता ने पी ली। उसका शरीर नीला पड़ गया था। उसकी चीख बाहर न निकले इसके लिये निकिता ने कपडा मुँह में ठूँस रखा था। इसप्रकार निकिता की मौत हो गई। उसने अपनी जीवन लीला समाप्त कर ली थी।

विजय कृष्णा कर्नाटक आब्जर्वर न्यूज़पेपर का सीनियर फोटोग्राफर था। अपने काम के दौरान उसकी मुलाकात विनीता और मंजू से होती है। दोनों विजय से प्यार करने लगती हैं। विजय विनीता का प्रोफाइल बनाना चाहता है और वह मंजू को स्वीमिंग सूट में फोटो खींचने के लिए भी मनाना चाहता था। वह माडलिंग के लिए मंजू को दस हज़ार रुपये देता है लेकिन वह नहीं लेती। वह उसे मोबाइल फोन खरीदकर देता है। कुवागम मेले में भी विजय कृष्णा, मंजू , विनीता तीनों की मुलाकात होती है। दोनों विजय से प्यार करने लगी थीं। मंजू ने विजय के नाम का मंगलसूत्र पहन लिया था और उसे तोड़ने के लिए तैयार नहीं है। उसने अपनी माँग में विजय के नाम का सिंदूर भरा है। वह फिर से विधवा का जीवन जीना नहीं चाहती। वह विजय के साथ अपना घर बसाना चाहती है। जब पुजारी उसके मंगलसूत्र को तोड़ने आते हैं तब वह भागकर विजय जिस होटल के कमरे में ठहरा है वहाँ आती है और उससे अपने प्यार का इजहार करती है। वह कहती है कि वह पूरी स्त्री है और उसके माता-पिता ने उसे बचपन में ही उसे डिम्पल को बेच दिया था। वह विजय के साथ घर बसाना चाहती है। तब विजय उसकी सच्चाई बयान करता है कि वह एक हिजड़ा है। उसने ट्रांसजेंडर की नियति को अपनाने से इनकार किया है। समाज में खुद को स्थापित करने के लिए कडा संघर्ष किया है – "दुनिया के दंश से अपने-आपको बचाने के लिए मैंने लगातार लड़ाई लड़ी और खुद को स्थापित किया। मैं नाचना-गाना नहीं, नाम कमाना चाहता था। भगवान राम के उस मिथक को झुठलाना चाहता था, जिसके कारण तीसरी योनि के लोग नाचने–गाने के लिए अभिशप्त हैं .... परिवार और समाज से बेदखल हैं ....."[9] इस सच्चाई को विनीता भी विजय के कमरे के बाहर खड़ी होकर सुन लेती है जो विजय से अपने प्यार को जाहिर करने आई थी। इसप्रकार विजय भी चिन्दियों में टूटकर बिखरने के बजाय सशक्त पात्र के रुप में पाठकों के सामने उपस्थित है।

'तीसरी ताली' उपन्यास में विश्व भर में फैले रेखा चितकबरी के देह व्यापार के रैकेट, गे, लेस्बियन और गद्दी के लिए हिजड़ों के बीच की लड़ाई को भी शब्दबद्ध करने का कार्य किया है। पैसे की लालच में हिजड़े भी देह व्यापर में लग गयें हैं। गरीबी और अभावग्रस्तता के कारण सामन्य लोग हिजड़ा बनकर भीख माँगने लगे हैं। इन तमाम सच्चाईयों से रु-ब रु कराता है यह उपन्यास।

निष्कर्ष-: वर्तमान दौर में ट्रांसजेंडरों द्वारा समाज में अपनी पहचान को पुख्ता करने के कार्य किये जा रहे हैं। वे भी समाज कल्याण के लिए कटिबद्ध हैं। देश प्रेम की भावना उनके भीतर कूट-कूटकर भरी हुई है। उनमें आये इस बदलाव को हिंदी साहित्य द्वारा रेखांकित करने का कार्य किया जा रहा है। उनके संघर्ष को, उनकी जीवन शैली में आये बदलाव को, सर्वोपरी उनके मज़बूत मंसूबे को चित्रित करने में 'तीसरी ताली' उपन्यास मील का पत्थर साबित हुआ है।

संदर्भ ग्रंथ :

1. किन्नर विमर्श दशा एवं दिशा-डॉ. विनय कुमार पाठक-पृ : 70
2. प्रदीप सौरभ-तीसरी ताली-पृ: 176
3. वही-वही-पृ : 178
4. वही-वही-पृ :115
5. वही-वही-पृ : 117
6. वही-वही-पृ :81
7. वही-वही-पृ : 97
8. वही-वही-पृ : 44
9. वही-वही-पृ :195

•